24/7/2020

श्लोकसं०-19

काश्यपः - वत्से किमेवं कातराऽसि ।

" अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला ।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि ॥ "

शब्दार्थ -

वत्से = हे पुत्रि । अभिजनवतः = महाकुलीनस्य = महाकुलीन के भर्तुः = पत्युः = पति के । श्लाघ्ये = प्रशंसनीये = प्रशंसनीय पर । गृहिणीपदे = गृहलक्ष्मीस्थाने = गृहिणी के पद पर । स्थिता = अधिष्ठिता = प्रतिष्ठित होकर । तस्य = भर्तुः = पति के । विभवगुरुभिः = समृद्धिभिः महद्भिः = समृद्धि से पूर्ण महत्वपूर्ण कार्यों द्वारा । कृत्यैः = कार्यैः (कार्यों द्वारा) । प्रतिक्षणं = प्रतिपलम् = हर समय । आकुला = व्यस्ता सती = व्यस्त (संलग्न) होने पर । अचिरात् = शीघ्रमेव = जल्दी ही (त्वरित समय पर) । प्राची = पूर्वा दिक् = पूर्व दिशा । अर्कमिव = सूर्यमिव = सूर्य के समान । पावनं = पवित्रम् = पवित्र (पुनीत) । तनयं = पुत्रम् = पुत्र । प्रसूय = उत्पाद्य = जन्म देकर । मम = काश्यपस्य = काश्यप मुनि के । विरहजां = वियोगोत्पन्नाम् = अलगाव से उत्पन्न (जन्य) । शुचं = शोकम् = दुःख को । न गणयिष्यसि = न चिन्तयिष्यसि = नहीं चिन्ता करोगी (नहीं ध्यान दोगी) ।

प्रसंग - काश्यप मुनि शकुन्तला को कहते हैं पतिगृहगमन के अवसर पर ।

पुत्री - " तुम इसप्रकार से क्यों दुःखी होती हो ?

25/7/2020

हिंदी अनुवाद - पुत्री, तुम (शकुन्तला) महाप्रतिष्ठित वंश के पति के (1) पूजनीय गृहलक्ष्मी (महारानी) पद पर आसीन होकर (2) समृद्धि से पूर्ण महत्वपूर्ण कार्यों में प्रतिक्षण व्यस्त होकर और (3) त्वरित समय पर पूर्वदिशा जैसे पावन सूर्य को अभिव्यक्त करती (जन्म देती) है वैसे ही पवित्र (चक्रवर्ती) पुत्र को जन्म देकर, मेरे अलगाव से जन्य दुःख को नहीं ध्यान दोगी। (ये तीन कारण (हेतु) हैं)

अलंकार :

(इव)

(क) प्राचीवार्कम् - पूर्वदिशा जैसे सूर्य को जन्म देती है वैसे ही तुम (शकुन्तला) पवित्र और चक्रवर्ती पुत्र को जन्म दोगी।
यहाँ उपमा अभिप्राय के साथ है।

(ख) पावनम् = तुम्हारा पुत्र कलंक से रहित तथा धर्म से युक्त होगा।

(ग) विरहजां = तुम मेरे वियोग के दुःख को नहीं गिनोगी अर्थात् भूल जाओगी।

(नहीं गणना करोगी)
यहाँ इव के द्वारा उपमा है। न गणयिष्यसि के तीन कारण होने से काव्यलिंग है। तीन कारणों के एकस्थान पर होने से समुच्चय अलंकार है।

(1) उपमा अलंकार - एक वाक्य में दो पदार्थों की विपरीतगुण/धर्म रहित तथा स्पष्टरूप से अभिव्यक्त समानता को उपमा कहते हैं।

(2) काव्यलिङ्ग अलंकार - जहाँ किसी के हेतु (कारण) के रूप में वाक्य का अर्थ अथवा पदार्थ प्रकाशित हो वहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार होता है।

(3) समुच्चय अलंकार - जहाँ काम को सिद्ध करनेवाला एक हेतु (कारण) है, फिर भी उसी काम को पूर्ण करने अन्य हेतु भी एकत्रित हो, तो वहाँ समुच्चय अलंकार है।